

पार्थेनन मूर्तियाँ

स्रोत: इकोनॉमिक टाइम्स

एथेंस ने लंदन पर ववादित मूर्तियों (जन्हें एल्गनि मारबल्स के नाम से भी जाना जाता है) पर बातचीत से बचने का आरोप लगाया, जिससे ब्रिटिश संग्रहालय में रखी पार्थेनन मूर्तियों को लेकर ग्रीस और ब्रिटन के बीच राजनयिक ववाद छड़ि गया है।

- उनकी स्थायी वापसी के लिये ग्रीस के बार-बार अनुरोध के बावजूद ब्रिटन और ब्रिटिश संग्रहालय ने लगातार इनकार कर दिया है।

पार्थेनन मूर्तियाँ क्या हैं?

- परचिय:
 - ब्रिटिश संग्रहालय में रखी पार्थेनन मूर्तियाँ पत्थर की ग्रीस की 30 से अधिक प्राचीन मूर्तियों का संग्रह है, जो 2,000 साल से अधिक पुरानी हैं।
 - मूल रूप से एथेंस में एक्रोपोलिस पहाड़ी पर पार्थेनन मंदिर की दीवारों और मैदानों को सजाने वालीये कलाकृतियाँ एथेंस के स्वर्ण युग के महत्त्वपूर्ण अवशेष हैं, मंदिर का निर्माण 432 ईसा पूर्व में पूरा हुआ था।
 - देवी एथेना को समर्पित, पार्थेनन सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्त्व की प्रतीक हैं।
- कलात्मक चित्रण और सांस्कृतिक महत्त्व:
 - मूर्तियों के बीच 75 मीटर तक फैला एक उल्लेखनीय खंड एथेना के जन्मदिन का जश्न मनाते हुए एक जुलूस को चित्रित करता है। इसके अतिरिक्त संग्रह की अन्य मूर्तियाँ जो विभिन्न देवताओं, नायकों और पौराणिक प्राणियों को दर्शाती हैं।
 - इनका जटिल शिल्प कौशल और ऐतिहासिक संदर्भ इन मूर्तियों को न केवल कलात्मक खजाना बनाते हैं बल्कि ग्रीस की सांस्कृतिक वरासत का अभिन्न अंग भी बनाते हैं।
- ब्रिटन में आगमन:
 - उन्हें 19वीं सदी की शुरुआत में एल्गनि के 7वें अरल और ऑटोमन साम्राज्य के तत्कालीन ब्रिटिश राजदूत थॉमस ब्रूस द्वारा पार्थेनन से हटा दिया गया था। मारबल्स को ब्रिटन ले जाया गया और वर्ष 1816 में ब्रिटिश संग्रहालय द्वारा खरीदा गया।
- मूर्तियों को लेकर ववाद:
 - मूर्तियों के संरक्षक के रूप में कार्यरत ब्रिटिश संग्रहालय का दावा है कि एल्गनि ने उन्हें ऑटोमन साम्राज्य के साथ एक अनुबंध के माध्यम से कानूनी रूप से प्राप्त किया था।
 - जबकि एथेंस ने एल्गनि पर चोरी का आरोप लगाया, उसने दावा किया कि उसके पास अनुमति पत्र था। दुर्भाग्य से मूल अनुमति पत्र खो गया है, जिससे उनके दावे की प्रामाणिकता ववाद में पड़ गई है।



ऑटोमन साम्राज्य:

■ ऐतहासिक अवलोकन, उत्थान और वसितार:

- 13वीं शताब्दी के अंत में उस्मान प्रथम द्वारा स्थापित ऑटोमन साम्राज्य, एक छोटे अनातोलियन राज्य के रूप में शुरू हुआ और धीरे-धीरे इसने न्यू वजिय के माध्यम से अपने क्षेत्र का वसितार किया।
- महमद द्वितीय के नेतृत्व में ऑटोमन्स ने वर्ष 1453 में कूस्तंतुनिया पर अधिकार कर लिया, जो बीजान्टिन साम्राज्य के अंत का प्रतीक था। यह साम्राज्य 16वीं और 17वीं शताब्दी के दौरान सुलेमान द मैगनफिसिंट के तहत अपने चरम पर पहुँच गया, जिसने तीन महाद्वीपों: यूरोप, एशिया और अफ्रीका में फैले एक विशाल क्षेत्र को नियंत्रित किया।

■ प्रशासनिक संरचना और सांस्कृतिक वरिासत:

- ऑटोमन साम्राज्य अपनी परष्कृत प्रशासनिक प्रणाली के लिये जाना जाता था, जिसमें **सुल्तान की अध्यक्षता** में एक केंद्रीकृत सरकार थी।
- ऑटोमन कानूनी प्रणाली, जिसे "कानून" के नाम से जाना जाता है और तुर्की भाषा के उपयोग ने साम्राज्य के सांस्कृतिक प्रभाव बढ़ाने में योगदान दिया।

■ पतन एवं वधितन:

- **17वीं सदी के अंत** में सैन्य पराजयों, आंतरिक कलह और आर्थिक चुनौतियों के कारण ऑटोमन साम्राज्य को धीरे-धीरे गरिवट का सामना करना पड़ा।
- 19वीं शताब्दी में साम्राज्य को आधुनिक बनाने के उद्देश्य से **तंज़ीमत के नाम से पहचाने जाने** वाले सुधारों की एक शृंखला देखी गई, लेकिन इसे तेज़ी से बदलते वैश्विक परिदृश्य के साथ तालमेल बनाए रखने के लिये संघर्ष करना पड़ा।
- **प्रथम विश्व युद्ध** में केंद्रीय शक्तियों के पक्ष में साम्राज्य की भागीदारी के कारण इसकी हार हुई और बाद में वजियी मतिर राष्ट्रों द्वारा इसका वभिजन कर दिया गया। वर्ष 1923 में ऑटोमन साम्राज्य के पतन, जो इसके छह शताब्दी लंबे अस्तित्व के अंत का प्रतीक था, के साथ **मुस्तफा कमाल के नेतृत्व** में तुर्की गणराज्य की स्थापना हुई।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

प्रश्न .नमिनलखिति में से कसि उभारदार मूरतशिल्पि (रल्लिफ स्कल्पचर) शलिलेख में अशोक के प्रस्तर रूपचत्तिर के साथ 'राण्यो अशोक' (राजा अशोक) उल्लखिति है? (2019)

- कंगनहल्ली
- साँची
- शाहबाजगढ़ी
- सोहगौरा

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/parthenon-sculptures>

